IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, June 2019
Impact Factor: 4.819

प्राचीन भारतीय राजनैतिक चिंतन परंपरा तथा गीता मे प्रतिपादित लोक संग्रह की अवधारणा का दार्शनिक विवेचन

डॉ. इन्दु प्रकाश सिंह

सहायक प्रोफेसर दर्शन शास्त्र

हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नैनी, प्रयागराज

dripsingh22@gmail.com

सारांश – भारतीय राजनैतिक चिंतन में राज्य का प्रमुख राजा होता था तथा उसका मुख्य कार्य 'लोकसंग्रह' का संपादन था।[1] इसका अर्थ यह है कि राजा को लोककल्याण की कामना से अपनी सम्पूर्ण प्रजा में पारस्परिक सहयोग स्थापित करना चाहिए जिससे वे परस्पर हार्दिकता अनुभव करते हुए राज्य के प्रति अटूट निष्ठा रख सकें। परिणामस्वरूप धर्म, अर्थ, काम एवंमोक्ष की सिद्धि हो सके और प्रत्येक अपने स्वाभाविक कर्म एवं दक्षता के साथ श्रेय संपादन करने में शक्य हो सके। मनु ने भी लिखा है कि,–इस जगत में राज के अभाव में सर्वत्र हाहाकार होने लगा, तब 'लोकरक्षा' के लिए ईश्वर ने राजा को बनाया–

vjktd fg ykd·fLeuUlorkfonzrs Hk;krA

j{kkFkZeL; loZL; jktkuelt̀tRizHkq%AA [2]

ध्यातब्य है कि 'मनु' भी लोकसंग्रह के लिए ही राजा के सृष्टि की आवश्यकता को स्वीकर करते हैं। अतः 'लोकरक्षा' या लोकसंग्रह के लिए ही सम्पूर्ण राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं व्यावहारिक नीति–नियम या व्यवस्थायें जन्म लेती हैं।

मुख्य शब्द – लोकसंग्रह, मनु', राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व्यावहारिक, नीति–नियम, साध्य, साधन, 'लोकरक्षा', आत्मौपम्य,।

साहित्यावलोकन. डॉ0 ओ0 पी0 गावा–राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा,।

मनुस्मृति,। भगवद्गीता, । रूद्राअष्टाध्यायी। एईशावास्योपनिषद,। डॉ0 जे0 सी0 जौहरी, एवं सीमा जौहरीएआधुनिक राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त। समाज धर्म एवं दर्शन का त्रैमासिक, ।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, June 2019
Impact Factor: 4.819

प्रस्तावना-

‘लोकसंग्रह’ साध्य है, अन्य संस्थाएं तथा उनके व्यवहार साधन मात्र हैं।

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि मैं मनुष्यों में राजा हूँ–

ukjk.kka p ujkf/kie~AA [3]

तथा इस बात के लिए चिंतित हैं कि मैं राजा होकर यदि लोकसंग्रह या लोककल्याण के लिए कर्म नहीं करूंगा तो लोग मेरा अनुसरण करते हुए कर्म से भागेंगे तथा मै समाज को भ्रष्ट करने का कारण बनूंगा–

mRlhns;fjes yksdk u dq;kZ de Z pnge~ A

l³djL; p drkZ L;keqigU;kfeek% iztk%AA [4]

अतः राज्य का प्रतिनिध ‘राजा’ या समाज का कोई भी प्रमुख व्यक्ति वह चाहे जिस रूप में हो–जैसा कि वर्तमान समय में ‘राजा’ के स्थान पर ‘राज्य’ की अवधारणा प्रचलित है; तथा राज्य ही संप्रभु है; व्यक्ति विशेष नहीं, तो राज्य का भी यह दायित्व है कि वह ‘लोकरक्षा’ हेतु सजग एवं प्रयत्नशील रहे।

यहां ‘लोकरक्षा’ या ‘लोकसंग्रह’ ‘राज्यरक्षा’ से वृहद अवधारणा है। जहां ‘राज्यरक्षा’ में सीमित भौगोलिक सीमा तथा सीमित लोगों की रक्षा से अभिप्राय है; वहीं ‘लोकरक्षा’ में राज्य की भौगोलिक सीमा का अतिक्रमण हो जाता हैं ‘लोकरक्षा’ में अनेक राज्यों या राष्ट्रों के मनुष्यों के साथ पशु–पक्षियों, वृक्षों, लताओं, कीट–पतंगों, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, अंतरिक्ष, जड़–चेतन सबके कल्याण एवं रक्षा का भाव समाहित है। इस सर्वकल्याण का स्पष्ट निदर्शन यजुर्वेद के शान्तिपाठ में दृष्टिगत होता है जब ऋषि प्रार्थना करता है कि–

|k% 'kkfUrjUrfj{k xx 'kkfUr% iFoh 'kkfUrjki% 'kkfUr jk"k/k;% 'kkfUr%A ouLir;% 'kkfUr fo'ons ok% 'kkfUrcãã

'kkfUr% lo xx 'kkfUr% 'kkfUrjo 'kkfUr% lk ek 'kkfUrjf/kAA [5]

वस्तुतः ‘लोकरक्षा’ में न केवल प्राणिमात्र के प्रति आत्मौपम्य दृष्टि अपितु ‘सर्वखलु इदं ब्रह्म’ का भाव पूर्व पक्ष के रूप में अपेक्षित है। जब तक यह भाव नहीं होगा कि सृष्टि में जितने भी आत्मभूत तत्व होगा कि सृष्टि में जितने आत्मभूत तत्व दृश्यया अदृश्यरूप में है वह सभी एक सार्वभौम आत्मतत्व के ही अंश है तथा भेद तो काम, क्रोध, लोभ के कारण अज्ञान बस है, तत्त्वतः हम सभी एक हैं; तब तक उनके नागरिकों को शत्रुता के भाव से ही देखेगा, तथा पारस्परिक सहयोग से दूर रहेगा।

अतः आधुनिक राज्यों से जो मानवता वादी एवं लोककल्याणकारी होने का दावा करती है तथा अपने व्यवहार से भी यह प्रमाणित करती है उन्हें उपनिषदों एवं गीता के आत्मौपम्य दृष्टि को राज्य के नीतिनिदेशक आदर्शों के व्यवहारिक निकष के रूप में अंगीकार करना होगा।

ईशावास्योपनिषद का उद्घोष है कि, जो मनुष्य सम्पूर्ण प्राणियों को परमात्मा में ही निरंतर देखता है और सम्पूर्ण प्राणियों में परमात्मा को वह कैसे किसी से घृणा या द्वेष कर सकता है। और ऐसी स्थिति में उसके अन्तःकरण में शोक, मोह आदि विकार कैसे रह सकते हैं–

;Lrq lokZf.k Hkwrku;kReU;sokuqi';frA

lozHkwrs"kq pkReuq rrks u fotqxqIlrsAA [6]

;fLeu~ lokZf.k HkwrkU;kReSokHkwn~ fotkur%A

r= dks ekg% d% 'kksd ,dRoeuqi';r%AA [7]

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

पुनश्च, लोकसंग्रह स्वतः होगा, क्योंकि लोभ (सत्तालोभ, धनलोभ, यशलोभ, कामलोभ आदि) ही पाप कर्म के लिए प्रेरित करता है, तथा पाप कर्म करने के बाद अंत में शोक होता है। जब सब कुछ अपने ही अंग हैं तो किसके लिए किसकों मारें, या किसके लिए पाप कर्म करें? क्या हाथ के लोभ से पैर को काटा जा सकता है? या नाक बचाने के लिए आंख फोड़ा जा सकता है? ऐसी ही स्थिति होती है, जब व्यक्ति स्वयं में समाज को तथा समाज में स्वयं को देखता है। ऐसी ही लोकदृष्टि की बात गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि मुझसे भिन्न दूसरा कुछ भी नहीं है, सम्पूर्ण सृष्टि के मनिये की भांति मुझसे गुंथा है।[8] मैं सब भूतों के हृदय में स्थित सबका आत्मा हूं।[9] समस्त प्राणियों का जीवन शक्ति मै हूं।[10] चर अचर कोई प्राणी नहीं जो मुझसे रहित हो।[11]

अस्तु, जब एक राज्य या राष्ट्र द्वारा लोकदृष्टि के साथ लोक कल्याण के लिए कोई कार्य या नीति बनायी जाती है तो वह निश्चित रूप से लोकसंग्रह की भावना के अनुकूल होती है। इस परिप्रेक्ष्य में लोक कल्याण का व्यावहारिक उदाहरण वैश्विक स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ एवं उसकी एजेन्सियां तथा कुछ स्वतंत्र एजेन्सियां (अभिकरण) जैसे–रेडक्रास, मानवाधिकार आयोग, आदि क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और धर्म–लिंग–जाति सम्बन्धी संकीर्णताओं को त्यागकर विश्व के जनमानस के कल्याण हेतु कार्य कर रही हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ का घोषणा–पत्र जो 14 अक्टूबर 1945 को 50 राष्ट्रों द्वारा हस्ताक्षरित हुआ, के प्रस्तावना में लोककल्याण का भाव निहित है, जो उल्लेखनीय है–

''हम, संयुक्त राष्ट्र के लोग, भावी पीढ़ियों को युद्ध के विनाश से बचाने के लिए जिसने हमारे जीवन काल में दो बार मानवजाति के लिए अकथनीय कष्ट पहुंचाया है, तथा मौलिक मानवीय अधिकारों में, मानव की प्रतिष्ठा तथा मूल्य में, छोटे तथा बड़े सभी राष्ट्रों के पुरूषों व महिलाओं के समान अधिकारों में, विश्वास की पुनः पुष्टि करने के लिए.तथा अधिक स्वतंत्रतापूर्वक प्रगति व जीवन के बेहतर स्तरों को बढ़ावा देने के लिए तथा इन लक्ष्यों के लिए सहनशीलता रखते हुए एवं एक दूसरे के साथ अच्छे पड़ोसियों के समान शान्तिपूर्वक रहने, तथा अन्तराष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा को बनाए रखने के लिए अपनी शक्ति को एकजुट करने, तथा.यह सुनिश्चित करने कि सामान्य हित के अतिरिक्त शस्त्र बल का प्रयोग नहीं किया जायेगा, तथा सभी देशों की जनता की आर्थिक व सामाजिक प्रगति को बढ़ावा देने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय तंत्र का प्रयोग करने के लिए कृत संकल्प हैं।''[12]

उपरोक्त प्रस्तावना में सामूहिक हित चिंतन की जो बात है, वह 'लोकरक्षा' के व्यापक निहितार्थ को ही चरितार्थ करता है, जहां 'राज्य–रक्षा' के स्थान पर 'लोकरक्षा' की वृहत्तर संकल्पना को मूर्त रूप देपने का प्रयास किया गया है। पुनश्च, संयुक्त राष्ट्र की विभिन्न अभिकरण–आर्थिक एवं सामाजिक परिषद ;अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय, संयुक्त राष्ट्र शिक्षा, विज्ञान तथा सांस्कृतिक परिषद अंन्तर्राष्ट्रीय पुननिर्माण एवं विकास बैंक (विश्व बैंक), अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन खाद्य एवं कृषि संगठन विश्व स्वास्थ्य संगठन संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास बैंक संयुक्त राष्ट्र संघ अन्तर्राष्ट्रीय शिशु आपात कोष संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम जनसंख्या नियंत्रण हेतु राष्ट्रकोष, ये सभी संयुक्त राष्ट्र की कल्याणकारी एजेन्सियां हैं, तथा स्वतन्त्र एजेन्सियां–रेडक्रास, अरब लीग, आसियान, जी–15, भारत सहायता क्लब, अफ्रीकी एकता संघ ये सभी भी कल्याणकारी अभिकरण हैं।

उपरोक्त अभिकरण एंव संगठन राष्ट्रों के मध्य आर्थिक तथा सामाजिक विकास के अवसर उपलब्ध कराने, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, मानवाधिकार, शिशु, महिला, एवं श्रमिकों के कल्याण अर्द्धविकसित तथा विकासशील गरीब राष्ट्रों के आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति करने, वहां रोग, भुखमरी, बेरोजगारी, महामारी, अशिक्षा, एवं अनुकूल मानवोचित जीवनस्तर के लिए प्रयास करते हैं। ये सभी एजेन्सियां लैटिन अमरीकी, अफ्रीकी, एवं एशियाई देशों में गरीब राष्ट्रों का सहयोग पारस्परिक गुटबाजी छोड़कर करते हैं। विश्व में कहीं भी प्राकृतिक आपदा आने पर ये अपनेपन के साथ मदद करती हैं।

इन के अतिरिक्त विभिन्न राष्ट्रों के द्वारा तथा स्वयं सेवी संगठनों के द्वारा भी वैश्विक समस्याओं एवे आपदाओं के

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

समाधान हेतु प्रयास किया जाता है। पारस्परिक शत्रुता को भूलकर एक राष्ट्र दूसरे का मदद करता है। जैसे भारत–पाक की शत्रुता जग–जाहिर है किन्तु पाकिस्तान में भूकम्प आने पर भारत ने आर्थिक एवं भावनात्मक दोनों मदद किया तथा पाकिस्तान के उस भाग के पुनर्निर्माण हेतु कोई कसर नहीं छोड़ा।

अस्तु, यहां प्रतिपादित करना असंगत नहीं होगा कि वस्तुतः मनुष्य में जो मानवता का अंश है वह जब जाग्रत होता है तो वह 'सर्वभूतहितेरताः' तथा 'सर्वखलु इदं ब्रह्म' के भाव से परिपूर्ण हो जाता है। मानव में जहां भी विध्वंसकारी प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है वहां उसकी आसुरी संपदा के [13] जागृति हो जाने के कारण है। किन्तु वस्तुतः मानव की मूल आत्मा तो 'आत्मवत सर्वभूतेषु' वाली ही है। वह तो काम, क्रोध, लोभ रूपी मनुष्य के दुर्गुण रूपी शत्रु हैं जो उससे पाप कर्म करवाते हैं।[14] यदि इसका समाधान हो जाय तो मानव तो ईश्वर का अंश है ही उससे पाप की अपेक्षा कहां है। वस्तुतः विश्व की जितनी भी राजनैतिक समस्याएं हैं उनका कारण है–सीमा विस्तार, पारस्परिक घृणा, नश्लवाद, उपनिवेषवाद, बाजारवाद आदि। ये सभी मनुष्य के लोभवृत्ति एवं अज्ञानता के कारण हैं। जब हम 'राज्य' या 'राष्ट्र' की भावना के स्थान पर 'लोक' की भावना से सोचते हैं तो हमारे सम्मुख सम्पूर्ण 'लोक' के कल्याण की बात आती है। जिसे मनु ने 'लोकरक्षा'[15] कहा है। फिर कैसा भूमि का विवाद? किसके लिए विवाद? अपरिग्रह के ज्ञान के अभाव में मनुष्य सत्ता विस्तार हेतु जीवन पर्यन्त संघर्षरत है। इसी परिप्रेक्ष्य में टालस्टाय ने अपनी कहानी How Much Land Does A Man Require के माध्यम से बताने का प्रयत्न करते हैं कि–व्यक्ति असीम तृष्णा के पीछे भले ही पागल होकर अपने जीवन की बाजी लगा देता है; किन्तु अंत में उसके शव को दफनाने भर के लिए आवश्यक भू–भाग ही उसके उपभोग में आता है। [16]

निष्कर्ष

इस प्रकार यदि मनुष्य में गीता के आत्मौपम्य दृष्टि का भाव स्थायी हो जाय तो वह निर्वैर, निष्कामी, अहिंसक, अपरिग्रही, मानापमान से रहित समभाव में रहते हुए अपने नियत कर्मों को करते हुए लोकसंग्रह का संपादन करेगा तथा ऐसी स्थिति में जिसे गीता 'ब्राह्मी स्थिति' कहती है विश्व के ज्वलन्त से ज्वलन्त समस्या का समाधान चाहे वह राजनैतिक हो या सामाजिक या आर्थिक स्वतः हो जायेगा। अतः आवश्यकता है लोकसंग्रह परक 'लोकदृष्टि' के व्यावहारिक प्रचलन की जो दुष्कर अवश्य है जैसा अर्जुन कहता है (ppy fg eu d".k) [17] किन्तु असंभव नहीं क्योंकि निरंतर अभ्यास एवं वैराग्य से उस स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है।

vH;klu r dkUr; ojkX;.k p xá rA[18]

संदर्भ-

1 . डॉ0 ओ0 पी0 गावा–राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा,
मयूर पेपर बैंक्स, बरेली 1983, पृष्ठ–3
मयूर पेपर बैंक्स, बरेली 1983, पृष्ठ–3

2 मनुस्मृति, 7 : 3–व्याख्याकार डॉ0 चमनलाल गौतम,
संस्कृत संस्थान, बरेली 1973

3 . भगवद्गीता, अध्याय–10, श्लोक–27

4 . भगवद्गीता, अध्याय–3, श्लोक–24

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, June 2019 Impact Factor: 4.819

5 . रूद्राअष्टाध्यायी, अध्याय–9, श्लोक 17

(यजुर्वेद, अध्याय–36, मंत्र–17)

श्रीधर शास्त्री, भारती परिषद प्रयाग, पृष्ठ सं0 55

6 . ईशावास्योपनिषद, मंत्र सं0 6, गीताप्रेस, गोरखपुर

7 . ईशावास्योपनिषद, मंत्र सं0 7, गीताप्रेस, गोरखपुर

8 . भगवद्गीता, अध्याय–7, श्लोक–7

eÙk% ijrj ukU;fRdf´pnfLr /kUk´ t;A

ef; lo fen ikr l= ef.k x.kk boAA

9 . भगवद्गीता, अध्याय–10, श्लोक–20

vgekRek xMkd'k loHkrk'k;fLFkr%A

10 . भगवद्गीता, अध्याय–10, श्लोक–2

HkrukefLe prukA

11 . भगवद्गीता, अध्याय–10, श्लोक–39

u rnfLr fouk ;RL;kU;k Hkr pjkpjeA

12 . डॉ0 जे0 सी0 जौहरी, एवं सीमा जौहरी–

आधुनिक राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त

स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा0 लि0 नई दिल्ली, 2000, पृष्ठ सं0 497

13 . भगवद्गीता, अध्याय–16, श्लोक–18

vgdkj cy ni dke Øk/k p lfJrk%A

14 . भगवद्गीता, अध्याय–3, श्लोक–37

dke ,"k Øk/k ,"k jtkx.klenHko%A

egk'kuk egkiklek fo);ufeg ofj.ke AA

15 . मनुस्मृति, अध्याय–7, श्लोक 3, उपरिउद्धृत ग्रन्थ।

j{kkFkeL; loL; jktkuel tRiHk%A

(लोकरक्षा हेतु ईश्वर ने राजा को बनाया।)

16 . समाज धर्म एवं दर्शन का त्रैमासिक, वर्ष 23 अंक 1–4, पृष्ठ सं0 116

17 . भगवद्गीता, अध्याय–6, श्लोक–34

18 . भगवद्गीता, अध्याय–6, श्लोक–35

DOI: 10.48175/568